International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 1, pp: 80-83 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चे : पारिवारिक व्यवस्था का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

लेखक संगीता रानी

सारांश :-

आधुनिक युग में स्त्री और पुरुष दोनों अपनी बढ़ती आवश्यकता के कारण बाहर निकल कर कार्य कर रहे है । जिससे पूर्व की संयुक्त परिवार व्यवस्था से एकल परिवार व्यवस्था की ओर रुख बढ़ा है । इस परिस्थिति में सर्वाधिक प्रभाव कामकाजी अभिभावकों के बच्चों पर देखा गया है । उनके बच्चों का संतुलित शारीरिक एवं मानसिक विकास प्रभावित हुआ है । साथ ही उनके सामाजीकरण' कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चे की पारिवारिक व्यवस्था का मनौवैज्ञानिक अध्ययन '' करना है ।

अभिभावकों एवं बच्चों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध बच्चे के मनोवैज्ञानिक स्वास्थय का आधार है । बच्चों की सफलता में अभिभावकों की सबसे बड़ी भूमिका होती है ।अभिभावक अपने बच्चों की शारीरिक , मानसिक , सामाजिक वित्तीय व उनकी सफलता की उचाइयों को छूने में अपनी जी जान से कोशिश करते है। आज जो बच्चा सफलता की उचाइयों को छू रहा है । उसमें सबसे बड़ा हाथउस बच्चे का नहीं बल्कि उसके पीछे माता पिता का होता है। माता पिता अपने बच्चों के लिए जीवन में कई बलिदान देते है । बच्चों की सफलता से उन्हें बलिदान का फल उन्हें प्राप्त होता है। माता पिता बनना दुनियॉ का सबसे बड़ा सौभाग्य होता है पर सौभाग्य के साथ एक जिम्मेदारी भी होती है

इन्हीं बदलती परिस्थितियों को शोधार्थी ने व्यक्तिगत् प्रेक्षणों एवं अन्य कई शोधार्थियों द्वारा पूर्व में किये गये अध्ययन की समीक्षा व विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर दोहरे कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों के माध्यम से पारिवारिक व्यवस्था मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्द : कामकाजी अभिभावक ,एकल परिवार ,संयुक्त परिवार

Date of Submission: 04-06-2020 Date of Acceptance: 19-06-2020

प्रस्तावना

आधुनिक युग जिसमें हम रह रहे है तीव्रता से बदलती नित नयी स्थितियों का युग है । इन्ही परिस्थितियों में हमें अपनी बढ़ती आवश्यकताओं के कारण बाहर निकल कर देखना पड़ रहा है। पूर्व की भारतीय सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था जिसमें मुख्यतः पुरुष ही आर्थिक क्रियाकलापों का दायित्व का निर्वाहन करता था ,किन्तु आज परिर्वतन आया है । आज स्त्री - पुरुष दोनों बाहर निकल कर अपनी आर्थिक सुरक्षा को मजबूती देने का प्रयास कर रहे है । जिससे पूर्व की संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था विघटित होकर एकल परिवार की ओर बढ़ रही है । इन नवीन सामाजिक परिर्वतन का प्रभाव सर्वाधिक रूप से कामकाजी अभिभावकों के बच्चों के विकास पर पड़ा है ।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 1, pp: 80-83 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे ही कामकाजी अभिभावकों जिनमें मातापिता दोनों घर से बाहर रह कर कार्य करते है ,के बच्चों के संतुलित शारीरिक मानसिक विकास पर क्या असर पड़ता है, साथ ही इस नवीन चुनौती में पूर्व की संयुक्त पारिवारिक व्यवस्थाए एवं वर्तमान एकल परिवार व्यवस्था की क्या भूमिका दिखाई पड़ रही है ?इस चुनौती का अध्ययन करना है ।

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों एवं परिवार की भूमिका का अध्ययन किया गया है ।पूर्व के शोध पत्रों में इस समस्या को विभिन्न प्रकार से देखने का प्रयास किया गया है । शोधार्थियों ने पूर्व में बच्चों का पालन पोषण पारिवारिक व्यवस्था की समस्या के रूप में देखा है जिसमें एकल परिवार में पति-पत्नि का सामंजस्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । जबकि संयुक्त परिवारों में कामकाजी मातापिता कों किसी विशेष समस्या का सामना नही करना पड़ता है ।शोधार्थियों ने एक दूसरे वर्ग ने यह भी देखा कि बच्चों के स्वस्थ विकास में सहानुभूति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ।जो बच्चों के मानसिक विकास के लिए जरूरी होती है । परन्तु कामकाजी अभिभावकों में समय की कमी के कारण यह चुनौती के रूप में देखी जा सकती है किन्तु शोधकर्ता का एक वर्ग यह भी मानता है कि अतिरिक्ति आय के होने के कारण अभिभावक अपने बच्चों के लिए अधिक अच्छी सुविधा जुटा पाते है ,अच्छी शिक्षा शिक्षा सुनिश्चित कर पाते है तथा उनमें आत्मनिर्भरता भी बढ़ी है । किन्तु साथ ही यह देखा गया है कि इस प्रकार की देखभाल में सहानभूति जैसे तत्वों की कमी से बच्चों में अकेलापन, भय एवं मातापिता के प्रति भावनात्मक लगाव कम हुआ है जिससे बच्चों में अकेलापन ,कुण्ठा एवं भयग्रस्तता के कारण बच्चे स्वच्छंदता की ओर भी उन्मुख हुए है । यह एक बड़ी चुनौती के रूप में परिवार व्यवस्था के सामने खड़ी हुई है । स्वयं अभिभावक भी अपनी व्यावसायिक एवं पारिवारिक दायित्वों के कारण संधर्ष का अनुभव कर रहे है । पूर्व शोधों के निष्कर्षों से यह भी पाया गया है कि संयुक्त परिवारों में बुजुर्गों ,रिश्तेदारों एवं परिवार के अन्य सदस्यों से उन्हें आवश्यक सहानुभूति प्राप्त होती है जिससे उनमें सामाजिक संस्कारों का पाया जाना देखा गया है ।

इस प्रकार पूर्व शोध पत्रों में मुख्यतः निम्न बातें देखी गयी ।

1. पति -पत्नि के आपसी सामंजस्य ने बच्चों के पालन पोषण में सहायता की है ।

2 .अभिभावकों के कामकाजी होने के कारण अतिरिक्त आय सुनिश्चित हुई है जिसके कारण उनके बच्चों का पालन पोषण बेहतर हो सका ।

3. अभिभावकों के कामकाजी होने के कारण समयाभाव होने से उनमें अकेलेपन का भाव आया जिससे परिवार से लगाव कम हुआ है ।

4 .संयुक्त परिवार में कामकाजी अभिभावकों के बच्चों में अपने परिवार से सहानुभूति मिली है जिससे उनमें अकेलेपन का अनुभवों में कमी आती है ।

अध्ययन के इसी कम में शोधार्थी ने सीहोर शहर के एक सूक्ष्म प्रेक्षण किया गया है । जिसमें 100 परिवारों का अध्ययन किया गया । इस अध्ययन में प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया जिसमें व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया ।जो इस प्रकार है :-

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 1, pp: 80-83 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

तालिका कमांक 1

क	परिवार से पूछे गये प्रश्न	एकल परिवार			संयुक्त परिवार		
		हॉ	नहीं	योग	हॉ	नहीं	योग
1	बच्चों के पालन पोषण समस्या	44	16	60	15	25	40
2	पालन पोषण हेतू सहायक	34	26	60	6	34	40
3	रिश्तेदारों का सहयोग	13	47	60	40	0	40
4	पति पत्नि द्वारा बच्चों की देखभाल हेतू सामंजस्य	55	05	60	20	20	40
5	पालन पोषण हेतू नौकरी छोड़ी गई	11	49	60	00	40	40
6	किसने छोडी नौकरी	पत्नी ने	0	0	0	0	0
7	क्या बच्चे बीमार पड़े	38	22	60	18	0	सामान्य
8	पति घर के काम में हाथ बटॉता है क्या	40	20	60	12	28	40

तालिका कमांक २

क०	प्रश्नावली	एकल परिवार	संयुक्त परिवार
1	बच्चों के पालन में समस्या	बहुत ज्यादा	सामान्य
2	सहायक रखा	हॉ	सामान्य नहीं
3	रिश्तेदारों का सहयोग	सामान्य	अधिकतम्
4	बच्चों की देखभाल के लिए पति पत्नी का सामंजस्य	अधिकतम्	सामान्य
5	क्या किसी एक को नौकरी छोड़नी पड़ी	सामान्य	सामान्य नहीं

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों तालिकाओं में से पहली सारणी को देखा जाए तो एकल परिवार को अधिक समस्या का सामना कर पड़ता है सामान्यतः उन्होनें अपने बच्चों की देखरेख के लिए एक सहायक रखा । जबकि संयुक्त परिवारों में इस प्रकार की कोई व्यवस्था प्रायः कम देखी गई । एकल परिवारो में रिश्तेदारों का सहयोग नहीं होता है साथ ही अभिभावकों के पास समय की भी कमी रहती है । किन्तु अतिरिक्त आय भी होने के कारण सहायक का सहारा लेना पड़ता है । एल परिवारों में कई बार बच्चों की देखभाल की व्सवस्था नहीं होने के कारण पत्नी को नौकरी छोड़नी पड़ती है । सर्वेक्षण में यह तथ्य भी देखा गया कि एकल परिवार वाले कामकाजी अभिभावक के बच्चे प्रायः ज्यादा बीमार पड़े जबकि संयुक्त परिवारों में यह दर काफी कम या सामान्य रहीं ।

इसी प्रकार सारणी क०२ को देखा जाऐ तो स्थायी रूप से बीमार बच्चों वाले परिवारों में बच्चों के पालन पोषण में समस्या देखी गयी किन्तु संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों में यह समस्या ज्यादा बड़ी देखी गई ।जबकि संयुक्त परिवार में यह समस्या कम रहीं ।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 1, pp: 80-83 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

परिणाम

उपर्युक्त प्राप्त तथ्यों को हम देखे तो कुछ प्रमुख तत्व निकलकर आते है। जो इस प्रकार है

1. बच्चों की देखभाल के लिए एकल परिवार के कामकाजी अभिभावको ने सामान्यतः सहायक रखे है।

2 बच्चों की देखभाल करना संयुक्तपरिवार की अपेक्षा एकल परिचवारों में ज्यादा कठिन रहा ।

3. संयुक्त परिवारो में रिश्तेदारो का सहयोग अधिक देखा गया ।

4. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल में एक महत्वपूर्ण योगदान पति पत्नी के मध्य सामंजस्य है।

5. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल में कुछ माताओ को नौकरी छोड़नी पड़ी ।

6. एकल वरिवारों के बच्चों की अपेक्षा संयुक्त परिचवारों के बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहा है।

अभिभावक अपने बच्चों के साथ किस प्रकार के व्यवहार करें

1 बच्चे पर अपना अधिकार नहीं जमाएं,किन्तु उनके साथ मित्रता का व्यवहार करें ।

2 बच्चों से अधिक अपेक्षा न करें । उससे बच्चों को एवं हमें किसी प्रकार तनाव नहीं आएगा ।

3 बच्चों की दृष्टि में धन की अपेक्षा प्यार का अधिक महत्व होता है ।इसे ध्यान में रखे ।

4 अपना अधिकाधिक समय बच्चों के साथ व्यतीत करें ।

5 बच्चों की सभी समस्याएं शांतिपूवक सुने ।

6 स्वयं से चूक होने पर भी उसे बच्चों के सामने स्वीकार करें ।

7 अभिभावक अपने बच्चे की तुलना कभी भी किसी अन्य बच्चों से न करें ।

संदर्भ सूची

शुक्ला अर्चना 1987 ''डीसीजन मेकिंग इन सिंगल एण्ड डयूल कैरियर फैमली ''आरगनाइजर बिहेवियर एण्ड ह्यूमन डीसीजन प्रोसेस पाल्यूम 51 पृ 51 - 75

कपूर रामा 1969 'रोल कान्फिलिक्ट एण्ड कॉपिग बिहेवियर ऑफमैरिड वर्किंग वूमेन ''पार्टिनिका जे ० सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमन वाल्यूम 3 , पृ ० 97 - 104

काजी ,मर्गेवस् 2012,कम्पलीट एण्ड कॉपिंग बिहेवियर फेमिली एण्उ प्रोफेश्नल लाइफ चैलेन्ज फॉर वकिग वूमेन मास्टर थेसिस स्प्रिंग 2012 लिनेयूस यूनिवर्सिटी स्वीडन ।

मनी ,विजया 2013 ,''जॉब फेमली एण्ड प्रोफेश्नल'' ग्लोबल जनरल ऑफ मैनेजमेंट एण्ड बिजिनस रिसर्च इण्टर डिसीपलीन ,वाल्यूम४ ,पृ० क० 130

पाण्डा,उत्तम कुमार ,2011 ,'' रोल कान्फिलिक्ट ,स्टेस एण्ड ड्यूल कैरियर कपल एन इम्पीरिकल स्टडी दी जनरल ऑफ फैमली वेलफेयर, पृ० 72 - 88

International Journal of Advances in Engineering and Management
ISSN: 2395-5252

IJAEM

Volume: 02 Issue: 01 DOI: 10.35629/5252

www.ijaem.net
Email id: ijaem.paper@gmail.com